प्रकृतिवाद
PHISIOCRACY

डा0 अज़रा बानो
एसोसिएट प्रोफेसर
अर्थशास्त्र विभाग
नारी शिक्षा निकेतन पी0जी0 कॉलेज,
लखनऊ–226022
मो0 9415766472
ई–मेल azrarafique7@gmail.com

According to Prof. H. Higgs – 'Physiocrates have been the subject of so many and such divergent appreciation by historians, philosphers, economists & student of political science that hardly a single general proposition of importance has been advanced with regard them by one writer which has not been contradicted by another' इतिहासकारों, दार्शनिकों, अर्थशास्त्रियों और राजनीति शास्त्र के विद्यार्थियों ने इनके विचारों की प्रशंसा विभिन्न प्रकार से की हैं और इनके योगदान के विषय में लेखकों में एक मत नहीं मिलता है।

फिजियोक्रेटी (Physiocratie) एक फ्रॉसीसी भाषा का शब्द है, जिसका निर्माण ग्रीक भाषा के फिजियस + क्रेटस (Physicus+Crates) शब्दों के मेल द्वारा हुआ है। इस शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम एक फ्रॉसीसी लेखक (Dupont De Nemours) ने 1768 में किया था। Physio का अर्थ प्रकृति और का Cracy अर्थ है शासन प्रणाली अर्थात् प्रकृति का शासन 'Rule of Nature.' फ्रांस के विचारकों ने ऐसे विचार प्रतिपादित किये जो कि आधुनिक आर्थिक विज्ञान के आधार बन गये है। इन विचारकों को प्रकृतिवादी Physiocrats के नाम से तथा इनकी विचार धारा को Physiocracy के नाम से पुकारा जाता है। इस व्यवस्था का प्रमुख आधार प्राकृतिक विधान है। इस विचार धारा के मूल संस्थापक फ्रैकों केने थे।

प्रकृतिवादी, वाणिज्यवादियों के विपरीत थे। इनका विश्वास था प्रकृति के नियमों पर चल कर मनुष्य अधिक से अधिक सुख एवं समृद्धि प्राप्त कर सकता है। इन सभी विद्धानों को निम्नलिखित तीन नामों से पुकारा गया हैः–

1– **प्रकृतिवादी (The Physiocrats)** इन विद्वानों के प्रायः सभी सिद्धान्त एवं नियम प्रकृति पर आधारित थे। प्रकृति तत्व पर अधिक बल देने के कारण इन्हें प्रकृति वादी (Physiocrats) नाम से पुकारा गया है।

2– **कृषि शाखा के विचारक** – इन विद्वानों ने कृषि उद्योग के महत्व भी दृष्टि से प्रथम स्थान दिया है। इसी से Adam Smith के विचारक या कृषि वादी (Agriculturists) के नाम से पुकारा और उनके विचारों को कृषि शाखा (Agricultural School) नाम से पुकारा है। प्रकृतिवादी कृषि विकास को आर्थिक विकास का साधन मानते हैं। इस सन्दर्भ में Franco Quesnay कैने का मत है कि प्रत्ये कवह बात जो कृषि के लिये हानिकारिक है राष्ट्र तथा राज्य दोनों के ही विरूद्व है। इसके विपरीत प्रत्येक वह बात जो कृषि के लिये हितकर है, राज्य और राष्ट्र दोनों ही के लिये लाभपूर्ण होती है। 'Every thing which is of disadvantage to agricultural prejudices the interest of the nation and of the state, and every thing which is favourable to agriculture is benefited to the state and the nation'.

3– **अर्थशास्त्रीं–** ये सिद्धांत स्वयं अपने आप को अर्थशास्त्री कहलाना पसन्द करते थे। T. Shumpter के अनुसार ये फिजोक्रेटस या Economists ही थे, जिन्होंने एक महान दरार फोड़ी जिसमें होकर आगामी समस्त प्रगति सम्भव हुई है।

'It was however, the Plysiocrstys of Economists who made the great break through which by all further progress in the field of analysis, by discovery and intellectual formulation of the circular flow of economic life.'

प्रमुख विचारकः–

1. **Framics Quesnay (1694-1774)**
2. **Duepont de Nemours (1793-1817)**
3. **Anne Robert Teurgot (1727-1781)**
4. **Mirabeau (1715-1789)**
5. **Le Trosne (1728-1780)**
6. **Abbe Baudean (1730-1792)**

प्रकृतिवाद को जन्म देने वाले कारणः–

प्रकाशित तथ्यों के आधार पर यह कहा गया है कि प्रकृतिवादी विचार धारा 1756 से 1778 तथा लगभग 22 वर्षों तक प्रचलित रही। इस विचार धारा का प्रारम्भ फ्रांस में हुआ था और वहॉ से सारे संसार में फैल गया। वास्तव में प्रकृतिवाद, वाणिज्यवाद के वियद्ध एक प्रकार की क्रान्ति थी जो कि लोगों की भुखमरी, यातनाओं और परीधीरता के प्रति उदार दृष्टिकोण बना कर विकसित हुई थी। प्रकृतिवाद से उदय के कारण इस प्रकार हैः–

1– **फ्रांस की दशा–** Louis लुई पंचदश (XV) और षोड्स (Louis XVI) के राज्य काल में फ्रांस की दशा बहुत अधिक बिगड़ गई थी। फ्रांस की तात्कालिक दशा का चित्र Prof. Hanay ने खींचा है उनका कहना है कि उस समय के फ्रांस की दशा बड़े रेलवे या कारखाने की भॉति थी जो कि ह्रास एवं क्षय के लिए कोई व्यवस्था नहीं रखता है। वास्तव में उसकी उत्पादन शक्ति समाप्त हो चुकी थी। उन्हीं के शब्दों में 'In short, France was like a great railway of factory which has made no allowance for depreciation or depletion her productive power was impaired & her credit shaken.'

2– **वाणिज्यवादी नीति–** फ्रांस में वाणिज्यवाद को 'कॉलबर्टवाद (colbertism) के नाम से पुकारा जाता था। वाणिज्यवादी आलोचकों में Melon, Fcnclon, Marshall, Vauban तथा Richard Carntillon आदि प्रमुख हैं। इन आलोचकों की आलोचनाओं ने जहॉ वाणिज्यवाद को जर्जर बनाया हैं, वहीं दूसरी ओर प्रकृतिवाद को जीवन प्रदान करने में पर्याप्त योग दिया है। निश्चय ही इन आलोचनाओं में उस समय की उत्पन्न समस्याओं का उत्तम समाधान था जिसे व्यक्तियों ने सप्रेम अपनाया।

3– **राज्य का अपव्ययः–** 14वीं शताब्दी से लेकर 16वीं शताब्दी तक फ्रांस में लुई वंश का शासन अत्याचारों से भरा पड़ा था। राजा जनता का शोषण कर के विलासता का जीवन व्यतीत कर रहा था। राजा कहता था ''मै ही हूँ'' (I am the state) राज्य दरबारी अपनी स्वार्थों की पूर्ति के लिये राजकोष से मनमाना

धन खर्च करने लगे थे। राज्य पर ऋण भार दिन प्रतिदिन बढ़ने लगा था। ऐसे विषम परिस्थितियों ने नवीन विचारों के विकास के लिये नया आधार प्रस्तुत कर दिया।

4– **अनावश्यक करारोपणः–** राजदरबारों ने भारी खर्चों की पूर्ति के लिये देश के निर्धनों पर अत्याधिक करारोपण किया जाने लगा। करारोपण का पूरा भार किसानों पर ही था। दक्षिणी फ्रांस में Taille नामक प्रत्यक्ष कर लगाया गया था। व्यापारियों और किसानों से उनकी आय का 50 प्रतिशत भाग करों के रूप में वसूल कर लिया जाता था। Mr. Hicks ने लिखा है ''फ्रांस की क्रान्ति का प्रमुख कारण भी अन्यायपूर्ण कर प्रणाली ही था जिसमे निर्धन वर्ग की अपेक्षा धनिकों पर कर का भार कम था।

5– **इंग्लैण्ड की कृषि क्रान्ति का प्रभावः–** इंग्लैण्ड के निवासी कृषि की ओर ध्यान देते थे। वे अधिक से अधिक पूँजी लगाकर नये कृषि साधनों को अपना कर दिन प्रतिदिन उन्नत कर रहे थे। जिसका प्रभाव फ्रांस पर भी पड़ा। Mr. Haney ने लिखा है 'The work of Newton was popularized, the philosophy of Lockef became widely accepted and the thought of Hume worked as a subtle leaven. ''इंग्लैण्ड ने अपनी कृषि की उन्नति द्वारा फ्रांस आदि देशों को प्रभावित किया तथा उन्हें कृषि क्रम की ओर प्रवृत्त किया था।''

6– **विज्ञान की नवीन खोजों का प्रभावः–** लोगों का बौद्धिक स्तर दिन प्रतिदिन ऊँचा उठ रहा था। विज्ञान की विभिन्न शाखाओं में अनेक महत्वपूर्ण अनुसंधान हो रहे थे। Newton अपने विशेष सिद्धान्त भूमि का गुरूत्वाकर्षण नियम 'Law of Gravitation' की खोज कर चुके थे और Dr. Queney ने अनेकों खेती सम्बन्धी नियमों की खोज कर ली थी। इन सभी नियमों ने प्रकृति के महत्व को सामने रखा जिसने प्रकृतिवाद के विकास में सहयोग दिया।

प्रमुख प्रकृतिवादी विचार या सिद्धांत

1– **प्राकृतिक व्यवस्था (The Natural Order)** – प्रकृतिवादी इस व्यवस्था को ''प्राकृति व्यवस्था का विज्ञान 'Science of the Natural Order' भी कहते थे। कुछ लोगों के मतानुसार प्राकृतिक व्यवस्था का अभिप्राय उस पुरानी व्यवस्था से है जिसमें मनुष्य, मनुष्य रूप में न रह कर एक पशु के सदृश्य जीवन व्यतीत करता था। दूसरा मत है कि मनुष्य समाज पर भी प्राकृतिक नियम इस तरह लागू होते हैं जो जिस तरह भौतिक पदार्थों पर होते हैं। डॉ0 केने के अनुसार ''मनुष्य और पशु–पक्षी एक से प्राकृतिक नियमों से ही नियंत्रित होकर कार्य करते हैं।'' 'The natural order is merely the physical constitution which god himself has given the universe.' इस विचार को रिवेरी ने इस प्रकार व्यक्त किया हैष ''इसकी स्थापना मनुष्यों द्वारा न होकर ईश्वर के द्वारा होती है।'' 'The social order is not the work of man, but is on the contrary, instituted by the auther of all nature himself, as all the other branches of the physical order.' इसी मत का समर्थन Prof Haney द्वारा भी है ''प्राकृतिक व्यवस्था और कृत्रिम व्यवस्था में पर्याप्त अन्तर है। कृत्रिम व्यवस्था अपूर्ण हैं क्योंकि वह मानवीय होती है।' 'It stood opposed to the order positive whose laws are human & whose arrangements are the imperfect of existing

governments in the resembling the distinction between made by Thomas Aqinas and ancient philosophers before him.' प्राकृतिक व्यवस्था के दर्शन प्राप्त करने का मार्ग बताते हुये डॉ0 कैने का कथन है कि मनुष्य को उस शिक्षा तक संस्कृति को ग्रहण करना चाहिये जो ईश्वरीय ज्योति को पहचानने में सहायक होती है। 'The laws of Natural order do not in any restrain the liberty of mankind of the great advantage which they possess is that they make of greater liberty.'

2– **शुद्व उत्पत्ति (Net Product)** शुद्व उपज वह मात्रा है जो कुल उत्पादन में से लागत को घटाने के बाद प्राप्त होती है। अतिरेक ही असली आय हैं। दूपों के अनुसार ''मनुष्य जाति की समृद्धि अधिकतम शुद्व उपज पर आश्रित है।'' The prosperity of mankind is bound up with maximum net production' कृषि की श्रेष्ठता को स्वीकार करते हुये कैने ने कहा था ''कृषि राज्य के समस्त धन तथा समस्त नागरिकों के धन का स्रोत हैं। Agriculture is the source of all the wealth for the state & the wealth of all citizens. ' प्राकृतिवादियों का विचार था कि कृषि ही एकमात्र ऐसी व्यवस्था है जो उत्पादन का प्रमुख स्रोत था तथा अतिरेक पैदा कर के जन–जीवन में खुशहाली ला सकता है। कैने का कहना है कि ''यह भौतिक सत्य है कि पृथ्वी ही सभी वस्तुओं के स्रोत है, यह इतना स्पष्ट है कि इसमें कोई सन्देह नहीं कर सकता है।'' The physical truth that the earth is the sources of all commodities is so very certain that none of us can doubt it.

3– **समाज में धन का वितरणः–** प्रकृतिवादियों ने सर्वप्रथम समाज में विभिन्न वर्गो के बीच धन अथवा वस्तुओं के वितरण की विधि का विश्लेषण किया था। प्रकृति वादी यह जानने के लिये इच्छुक थे कि समाज में धन किस प्रकार एक वर्ग से दूसरे वर्ग तक पहुॅचता है। मिराबो के शब्दों में 'The have been since the world began three great inventions- The third is the economic table' जब से संसार प्रारम्भ हुआ है तब से तीन महत्वपूर्ण अविष्कार ऐसे हुये है जिन्होंने राजनीतिक समाज को स्थिरता प्रदान की है। इसमें से पहला अधिकार है लेखन कला का, दूसरा अविष्कार है द्रव्य का और तीसरा अविष्कार है आर्थिक सारणी जो प्रथम दोनों अविष्कारों की पूर्ति करती है। यह हमारे युग का एक महान आविष्कार है जिसका सफल हमारी सन्तानें भोगेंगी। इसमें एक बड़ा सत्य छिपा है और इसी आर्थिक सारणी का निर्माण प्रकृति वादियों ने किया है। प्रो0 कैने ने समाज को तीन वर्गों में विभाजित किया हैः–

i) **उत्पादक वर्गः–** कृषक का स्थान प्रथम है। इसके साथ मछली पकड़ने वाले, खाने खोदने वाले लोगों को भी रखा गया है।

ii) **सम्पत्तिवान वर्गः–** इसमें भू–स्वामियों के अतिरिक्त राजाओं उनके सलाहकार, पादरियों तथा सैनिकों को रखा गया है।

iii) **अनउत्पादक वर्गः–** इस वर्ग के अन्तर्गत व्यापारी, उद्योगपति, शिल्पकार तथा अन्य साधारण पेशा करने वाले लोग सम्मिलित किये गये थे।

4– **मूल्य सम्बन्धी विचारः–** यद्यपि प्रकृतिवादी कृषि पदार्थों को उचित मूल्य प्रदान किये जाने के भारी पक्ष में थे किन्तु मूल्य निर्धारण में न कोई विशेष रूचि नहीं रखते थे। उनके अनुसार मूल्य दो प्रकार के हो सकते है।

i) **आधारभूत मूल्य (Prix or Fundamental Price) :–** यह मूल्य लागत पर आधरित है। बाद में इसे सामान्य मूल्य कहा जाने लगा।

ii) **प्रचलित मूल्य (Current Price) :–** वह बाजार मूल्य जो दुर्बलता और प्रचुरता के कारण क्रेताओं और विक्रेताओं के मोल–भाव करने की क्षमता से निर्धारित होता है।

प्रकृतिवादी मूल्य निर्धारण के किसी सिंद्धान्त का प्रतिपादन नहीं कर सकते थे। यह कार्य कुछ समय पश्चात् एडम स्मिथ के कुशल हाथों द्वारा किया गया था

5– मजदूरी जनसंख्या तथा ब्याज सम्बन्धी विचारः– प्रकृतिवादियों का विचार था कि मजदूर अपनी आवश्यकतानुसार पर्याप्त मजदूरी प्राप्त कर लेता है। तारगो के अनुसार ''मजदूरी की अधिकता के कारण मालिक कम से कम मजदूरी देगा, किन्तु फिर भी यह मजदूरी इतनी होगी कि जो मजदूर की जीविका थोड़ी विलासता और थोड़ी बचत के लिये भी काफी होगी।''

जनसंख्या वृद्धि को प्रकृतिवादी बुरा नहीं मानते थे। जनसंख्या का बढ़ना फ्रांस में उस समय प्रचलित विचारधारा के अनुसार प्राकृतिक विधान के अनुकूल था तथा अच्छा समझा जाता था।

ब्याज दर शुद्ध उपज और इसके मूल्य पर निर्भर करती है। प्रो0 कैने का कहना था कि खेती में जहां पूंजी के प्रयोग से शुद्ध उपज में वृद्धि होती है, ब्याज देना ठीक है, लेकिन उद्योगो में जहां सम्पत्ति की वृद्धि नहीं होती है, ब्याज देना उचित नहीं है।

6– विदेशी व्यापारः– प्रकृतिवादियों के मतानुसार विनियम से धन का उत्पादन नहीं होता है। क्योंकि विनियम दोनों पक्षों द्वारा होता है जो बराबर मूल्य की वस्तुओं का आदान–प्रदान करते है। ऐसी परिस्थिति में जबकि सामान्य मूल्य वाली वस्तुओं का आदान–प्रदान करते है। ऐसी परिस्थति में जबकि सामान्य वस्तुओं का आदान–प्रदान होता है, धन का उत्पादन नहीं होता। यह बात Le Trosne being given exchange for equal value. Consequently it is not a means of increasing wealth, for one gives us mush as other receives, but it is a means of satisfying wants & of varying enjoyment' 'प्रकृतिवादियों के अनुसार विदेशी व्यापार अनुउत्पादक क्रिया है तथा एक प्रकार से समय की बर्बादी है। Riviere रिवेरी के शब्दों में ''व्यापार से सम्पत्ति में उसी प्रकार से वृद्धि होती है जिस प्रकार से एक निश्चित ढंग से रखे हुए शीशों में सामने मिली वस्तु को रखने से उसके कई रूप दिखाई पड़ते है। 'Like mirror, too the traders seen to multiply commodities but they only deceive the superficial'.

7– कर प्रणालीः– देश की सम्पत्ति की सुरक्षा, शिक्षा, कृषि उत्पादन में वृद्धि, सड़का नहरों आदि जन कल्याण के कार्यों को सम्पन्न करने में लिये धन की आवश्यकता है। प्रकृतिवादियों ने राज्य की आय का मुख्य स्रोत कर ही बताया है और उनका मत है कि प्रत्येक नागरिक को प्रसन्नता के साथ यह राज्य को दे देना चाहिए। कैने के अनुसार "The Govt. ought to be less concerned with the task for saving than with the duty of spending upon those operations that are necessary for the prosperity of the socialism. This heavy expenditure will increase when the country has become wealth" प्रकृतिवादियों में मन के अनुसार कर केवल भू–सम्पत्ति स्वामियों से ही वसूल किया जाना चाहिये। प्रकृतिवादी परोक्ष कर के पक्ष में न होकर प्रत्यक्ष कर का ही सुझाव दिया है।

प्रकृतिवाद का महत्वपूर्ण प्रभाव – इसके महत्व इस प्रकार है :–

1– एलेकजेण्डर ने लिखा है कि कैने को आधुनिक अर्थ में अर्थशास्त्र में नींव डालने वाला कहलाने का अधिकार है। Quensay has substantial claims to be regarded as the real founder of the political economy in the modern sense.

2– ये प्रकृतिवादी ही थे जिन्होंने सर्वप्रथम व्यक्तिगत स्वतंत्रता के विचारों का समर्थन किया।

3– प्रकृतिवादियों ने व्यापार की अपेक्षा कृषि को अधिक महत्व दिया।

4– प्रकृतिवादी व्यक्तिगत सम्पत्ति के समर्थक थे।

5– प्रकृतिवादी ही प्रथम विचारक थे जिन्होंने सुख–शान्ति के लिये प्राकृतिक नियमों को मान्यता दी थी।

6– शुम्पीटर का कहना है कि कैने ने ही सर्वप्रथम सामान्य साम्य (General Equilibrium) की धारणा का प्रतिपादन किया था।

7– प्रकृतिवादियों ने ही उत्पादन के साधनों में वर्गीकरण का मार्ग प्रशस्त किया।

प्रकृतिवाद की त्रुटियॉः–

1– मूल्य सिद्धान्त के सम्बन्ध में प्रकृतिवादी पूर्णतया अनभिज्ञ थे।

2– प्रकृतिवादियों में विचारों में विरोधाभास की ध्वनि झलकती है।

3– प्रकृतिवादी कृषि को उत्पादक मानते थे।

4– प्रकृतिवादियों की सबसे बड़ी त्रुटि ये थी कि वे उद्योग तथा व्यापार को बांझ कहते थे। शुद्ध उपज का उत्पादन कृषि को ही मानते थे।

5– प्रकृतिवादी व्यक्ति की स्वतन्त्रता में बहुत अधिक विश्वास करते थे जिनमें परिणामस्वरूप उन्होंने सामाजिक कर्तव्यों तक को भुला दिया।

6– प्रकृतिवादियों का प्राकृतिक नियमों पर अटूट विश्वास था। वे इन नियमों को मनमाने ढ़ंग में लागू करना चाहते थे।

प्रकृतिवादियों के विचारों का महत्व स्वीकार करते हुए एडम स्मिथ ने कहा है कि 'यह प्रणाली त्रुटिपूर्ण होते हुए भी सत्य के सबसे निकट है, जो कि अभी राजनीतिक अर्थशास्त्र के विषय पर प्रकाशित होता है और इसी कारण यह उस व्यक्ति के लिये जो इस महत्वपूर्ण विज्ञान के सिद्धांतो का सावधानी से अध्ययन करना चाहता है, ध्यान देने योग्य है।

"The system, however with all the imperfections is perhaps the nearest approximation to the truth that has yet been published upon the subject of political economy and is upon that account, worth the consideration of any man who wishes to examine with attention the principles of that very important science."

Natural Philosophy:- Prof Gide & Rist के मतानुसार स्मिथ के प्रकृतिवाद और आशावाद नामक दो मौलिक विचार मिलते हैं। इन दोनों के ही अधिकतर उनमें सिद्धांत आधारित हैं। Wealth of Nations में ये दोनों विचार कहीं एक साथ और कहीं बिखरे रूप में दिखाई पड़ते है। Gide & Rist के अनुसार ''आधुनिक आर्थिक जगत असंख्य व्यक्तियों की स्वैच्छिक क्रियाओं का फल है जिसमें उन्होंने दूसरों का

ध्यान नहीं रखा बल्कि अपनी इच्छा के अनुसार ही कार्य किया है। यह आर्थिक जगत किसी एक संगठनकर्ता के दिमाग से उपज या किसी समाज की कार्यान्वित योजना का परिणाम नहीं, बल्कि असंख्य लोगों की भीड़ के अनगिनत कार्यो मे कुल जोड़ का प्रतिफल है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति ने स्वेच्छा से कार्य किया है और उसे करते समय वह उस कार्य के महत्व व प्रभाव से पूर्ण रूप से परिचित भी नहीं रहा है।''

एडम स्मिथ का कथन है कि''आर्थिक संस्थाओं का जन्म और विकास अपने स्वाभाविक अथवा प्राकृतिक रूप में हुआ है, जिनके निर्माण के लिये किसी प्रकार की योजना, बाहरी सहायक बल प्रयोग एवं नियमों का आवश्यकता नहीं पड़ी है। प्रत्येक व्यक्ति का अपना स्वार्थ होता है, वह अपना भला चाहता है। इसमें किसी हस्तक्षेप या संगठन की आवश्यकता नहीं है, ''यह मनुष्य के स्वभाव मे पाई जाने वाली अदला–बदली की रूचि का आवश्यक परिणाम है।'' "The present aspect of economic would of millions of individual each of when follows his own sweet will taking no need to others but men doubting the ultimate results." स्मिथ के अनुसार मानव व्यवहार स्वाभाविक रूप से 6 उद्देश्यों से प्रेरित था – आत्म–अनुराग, सहानुभूति, स्वतंत्र होने की इच्छा, औचित्य भाव, श्रम की आदत और लेन–देन की प्रवृत्ति, अदल–बदल और विनिमय एक दूसरे के लिये है। इस मानव व्यवहार के स्रोतों के आधार पर प्रत्येक व्यक्ति स्वाभाविक ही अपना भलाई का स्वयं सर्वश्रेष्ठ न्यायाधीश था। अतः उसे अपनी इच्छानुसार व्यवहारिक स्वतंत्रता होनी चाहिए। Human conduct according to smith, was naturaaly actuated by six motives: self love, sympatty, the desire to be free, a sense of proposity, a habit of labour and the propensity to truck, Barter & exchange are thing for another given these springs of conduct each man of was naturally the best judge of his ur interest and should therefore be left few to persue in his own way. आत्महित के उत्पादन में सब का हित निहित होता है। यह स्मिथ का मूल दर्शन है। इस बात को सिद्ध करने के लिये उसने निम्नलिखित उदाहरण दिये हैं:–

1– **श्रम विभाजनः–** हित पूर्ति की भावना ने धीरे–धीरे श्रम विभाजन को जन्म दिया है। प्रत्येक यक्ति अन्य व्यक्तियों को अपनी उत्पादित वस्तु इसी आशा से देता है कि बदले में उसको स्वयं उसी हित की वस्तु मिल जायेगी। दूसरे सभी आवश्यकता की वस्तुओं को व्यक्ति स्वयं निर्मित नहीं कर सकता है। अतः उसे आवश्यकता की पूर्ति के लिये विनिमय का सहारा लेना पड़ता है। फिर बाजारों का विस्तार हुआ। श्रम विभाजन का उदय हुआ। – एडम स्मिथ ने स्वयं लिखा है "Divsision of labour is not originally the effect of any human wisdom which forces and intends that general opulence to which it gives occasion. It is consequence of a certain propensity in human natre, the propenstives to truck, barter and exchange one thing for another".

2– **पूँजी :–** स्मिथ के अनुसार पूंजी का जन्म भी स्वाभाविक रूप से हुआ। अपनी दशा सुधारने के लिये व्यक्तियों ने संचय प्रारम्भ किया होगा। जिसमें कि उनका व्यक्तिगत स्वार्थ निहित है। स्मिथ के अनुसार अपनी स्थिति को सुधारने की इच्छा हमें बचत करने के लिए प्रोत्साहित करती है। यह इच्छा हमें जन्म से ही हमारे मन में निहित होती है तथा मृत्यु तक हमारा पीछा नहीं छोड़ती है। "But the principle

which promotes to save, is the desire of bettering our condition advise which though generally claim anddispassionate, comes with us form the womb and never leaves us till we go into grave."

3– **मांग एवं पूर्ति :– (Demand & Supply)** – स्मिथ के अनुसार मांग एवं पूर्ति का सिद्धांत आर्थिक संख्याओं के प्राकृतिक निकास का ही उदाहरण है। मांग एवं पूर्ति का सामन्जस्य स्वाहित की भावना से होता है। यदि कभी वस्तु पूर्ति की मांग से अधिक होती है तो उत्पादकों को वस्तु की लागत भी नहीं मिल पाती। उत्पादक स्वहित से प्रेरित होकर वस्तु की पूर्ति को घटा देंगे। अन्त में वस्तु की पूर्ति घटकर मांग के बराबर हो जायेगी। इसके विपरीत जब किसी वस्तुओं की मांग पूर्ति से अधिक होती है तो मूल्य बढ़ना है और वस्तु की पूर्ति भी बढ़ जाती है। संक्षेप मे स्मिथ के अनुसार ''वस्तु की बाजार में बढ़ाई गई मात्रा स्वाभाविक रूप से मांग के बराबर होती है। "The quantity of every commodity brought to the market naturally suits itself to the effected demand"

4– **मुद्रा–** जब मनुष्यों को अदला–बदला प्रणाली की कठिनाईयों का अनुभव होने लगा तब बुद्धिमान लोगों ने एक सर्वमान्यता के गुण पर द्रव्य का जन्म हुआ। इस प्रकार स्पष्ट है कि द्रव्य अनेक व्यक्तियों में कार्यों का परिणाम है। इस क्षेत्र में सरकार का हस्तक्षेप तो बहुत बाद में हुआ है।

5– **जनसंख्या** – स्मिथ के अनुसार जनसंख्या भी स्वाभाविक रूप से प्राकृतिक साधनों की मात्रा के साथ संतुलित होती है। यदि जनसंख्या प्राकृतिक साधनों की मात्रा से अधिक है तो कुछ समय के बाद जनसंख्या घटने लगेगी। इसके विपरीत यदि जनसंख्या प्राकृतिक साधनों से कम है तो धीरे–धीरे जनसंख्या बढ़ने लगेगी। वृद्धि का यह क्रम तब तक चलता रहेगा जब तक जनसंख्या प्राकृतिक साधनों के लगभग बराबर नहीं हो जाती। इस प्रकार जनसंख्या सन्तुलन की अवस्था में रहेगी। स्मिथ के अनुसार "It is only when wages are very low that poverty & misery cause the death of many of them but when wages are gairly high several of then manage to reach maturity."

1– आलोचकों का कहना है कि व्यक्ति केवल स्वहित से प्रेरित होकर कार्य नहीं करता है बल्कि कार्य करते समय उस पर अनेक बातों का भी प्रभाव पड़ता है।

2– आर्थिक संस्थाओं का जन्म प्राकृतिक एवं स्वाभाविक रूप से नही हुआ है।

3– स्मिथ ने प्राकृतिक और स्वाभाविक रूप से विकसित आर्थिक संस्थाओं को समाज के लिये हितकर माना है। आलोचकों ने इसे गलत धारणा कहा है– Gide & Rist के अनुसार While the conception of the spoutaneity of economic institutions seems to be just & fruitful, the demonstration given of the beneficial character appears insufficient and doubfful. आर्थिक संस्थाओं के स्वाभाविक विकास की धारणा तो उचित मालूम होती है, लेकिन उनका यह लाभकारी होना पूर्णतः प्रभावित नहीं होता।

सन्दर्भ

- आर्थिक विचारों का इतिहास – रमेश चन्द्र शर्मा
- आर्थिक विचारों का इतिहास – ऐरिक रोल
- आर्थिक विचारों का इतिहास – सुरेश चन्द्र शर्मा
- आर्थिक विचारों का इतिहास – डा0 चतुर्वेदी

  – डा0 चतुर्वेदी
- आर्थिक विचारों का इतिहास – डा0 अज़रा बानो